P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-6* February- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में कबीर
Sant Kabir in Present Scenario

भरतलाल मीणा
शोधार्थी,
इतिहास एवं संस्कृति विभाग,
राजस्थान यूनिवर्सिटी, जयपुर,
राजस्थान, भारत

सारांश

कबीर का आविर्भाव मध्यकाल की उस अंधकारमय स्थिति में हुआ जब सम्पूर्ण भारत में चारों ओर युद्ध का भय, साम्राज्य विस्तार, तुर्कों, अफगानों, मुगलों के मध्य आपसी संघर्ष तथा भारतीय देशी राजाओं के मध्य में संघर्ष हो रहा था। इस समय समाज में मुस्लिम एकेश्वरवाद–सूफी साधना प्रचलित थी। इसके अतिरिक्त नाथ संप्रदाय, पंडितो द्वारा कर्मकाण्डिय पूजा पद्धति प्रचलित थी। हालांकि भारत में शंकराचार्य के अद्वैतवाद का भी प्रभाव था। इसके साथ ही रामानंद जैसे परम संत की विचारधारा का भी प्रभाव था। लेकिन फिर भी जन असंतोष था क्योंकि जहाँ लोग शंकराचार्य के अद्वैत वेदांत को समझ नहीं पा रहे थे। वहीं कर्मकाण्डिय भक्ति द्वारा भी आत्म संतुष्टि नहीं कर पा रहे थे। क्योंकि कर्मकाण्डिय भक्ति मध्यम वर्ग तथा उच्च वर्ग ही कर सकता था। निम्न वर्ग दोनों ही तरह की भक्ति से पृथक था। क्योंकि निम्न वर्ग के पास भक्ति के लिये समय तथा धन दोनों का अभाव था। इसके साथ ही ब्राह्मणवादी कर्मकाण्डिय व्यवस्था ने निम्न वर्ग के एक तबके को अछूत तथा अपवित्र मानकर मन्दिरों से भी बेदखल कर दिया था। इससे निजात पाने के लिये तथा प्रशासन से लाभ प्राप्त करने के लिए हिन्दुओं के एक बड़े तबके ने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया था। लेकिन फिर भी परम तत्व को प्राप्त नहीं कर पा रहे थे। इस परम तत्व की अनुभूति कबीर ने हर व्यक्ति को सहज, सरल तरीके से प्रदान करने की युक्ति सुझायी तथा लोगों को मानसिक रूप से आश्वस्त किया। जिसमें किसी प्रकार का कोई धन खर्च नहीं था।

Kabir's emergence occurred in that bleak state of medieval times when there was a fear of war all over India, expansion of empire, mutual conflicts between Turks, Afghans, Mughals, and conflicts between Indian native kings. Muslim monotheism-Sufi cultivation was prevalent in the society at this time. In addition, ritualistic worship was practiced by the Nath sect, Pandito. However, there was also the influence of Shankaracharya's monotheism in India. Along with this, the ideology of a supreme saint like Ramananda was also influenced. But still there was public dissatisfaction because where people could not understand the Advaita Vedanta of Shankaracharya. At the same time, even through ritualistic devotion, they were not able to satisfy themselves. Because ritualistic devotion could only be done by middle class and upper class. The lower class was separate from both types of devotion. Because the lower class lacked both time and money for devotion. At the same time, the Brahminical ritualistic system, considering a section of the lower class as untouchable and impure, had evicted them from the temples. To get rid of this and to benefit from the administration, a large section of Hindus accepted the religion of Islam. But still they were not able to attain the ultimate element. Realizing this supreme element, Kabir suggested a way to provide every person in an easy, simple way and convinced people mentally which did not cost any kind of money.

मुख्य शब्द : एकेश्वरवाद, ध्वनि, सर्न, कर्मकाण्डीय, प्रासंगिकता, सार्वभौमिक, गुणातीत, निराकार, विचारधारा।

Keywords: Monotheism, Sound, Cern, Ritualistic, Relevance, Universal, Multiplicity, Formless, Ideology.

प्रस्तावना (Introduction)

काल में पनपी भक्ति, भक्ति आंदोलन की एक अभूतपूर्व देन थी। मध्यकाल में भक्ति काव्य का सृजन, भक्तिरस की धारा, प्रेम प्रधान भक्ति, समर्पण भक्ति इस युग की महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। मध्यकाल में भक्ति की दो विचारधाराएँ सगुण और निर्गुण रूप में आविर्भूत हुई। जहाँ सगुण उपासक ईश्वर को मनुष्य के समान सशरीर मानते हुए सभी दिव्य शक्तियों से सम्पन्न मोक्ष

प्रदान करने वाला मानते थे तथा कर्मकाण्डीय एवं समर्पण भक्ति भाव के द्वारा ईश्वर को प्राप्त कर रहे थे। वहीं निर्गुण उपासक ईश्वर को निर्गुण अर्थात गुणातीत, निराकार, सार्वभौमिक परम सत्ता के रूप में मान रहे थे। जिसकी प्राप्ति गुरु से विधिवत दीक्षा लेकर नाम सुमिरण के द्वारा एवं आचरण की शुद्धि बनाए रखते हुए आपस में सभी से भाईचारे एवं प्रेम के द्वारा ही सम्भव थी। जिसमें दया, करुणा, परोपकार निहित था। कबीर मुख्य निर्गुण संतों में थे। कबीर ने समाज में फैली विषमता को एवं अंधविश्वासों, रूढिवादिताओं, कर्मकाण्डों को दूर करने के लिए भरसक प्रयास किया।

अध्ययन का उद्देश्य (Objective of the Study)

वर्तमान समय में बढ़ती भौतिकता एवं आध्यात्मिकता के बीच संमवय बनाने के लिए कबीर जैसे परम संत के विचारों की प्रासंगिकता।

कबीर और गुरू संबंध (Kabir and Master Relationship)

कबीर ने परम तत्व को प्राप्त करने की अनुभूति की युक्ति संत रामानंद से प्राप्त की थी। जिसमें वो रामानंद को संबोधित करते हुए कहते है कि कबीर रामानंद का है जिसे सतगुरु सहायक के रूप में मिले और इन्होंने जो जग में जुगती अनूप थी वहीं बता दी यथाः–

कबीर रामानन्द का, सतगुरु मिले सहाय।
जग में जुगति अनूप है, सोई दई बताय।।[1]

रामानंद की प्रशंसा करते हुए कबीर ने कहा है कि दक्षिण भारत से भक्ति को उत्तर भारत में रामानंद लाये। जिसे कबीर ने प्रकट किया तथा साथ द्वीप, नौ खण्ड अर्थात सम्पूर्ण संसार में इसका प्रसार करवाया। जिसे निम्न श्लोक के माध्यम से व्यक्त किया जा सकता है–

भक्ति द्राविड़ ऊपजी लाए रामानंद।
परगट कियो कबीर ने सप्तद्वीप, नवखंड।।[2]

कबीर ने प्रत्येक मनुष्य को यह सलाह दी है कि गुरु ही इस संसार में सर्वोपरि सत्ता है। गुरु ही माध्यम है जो कि परम तत्व से रूबरू करवा सकता है। कबीर ने गुरु की प्रंशसा करते हुए कहा है कि गुरु और परम तत्व दोनों में गुरू श्रेष्ठ है। क्योंकि गुरू ही परमात्मा को आत्मा से मिला सकता है। कबीर ने गुरू को गोबिंद से बड़ा बताते हुए कहा है कि–

गुरू गोबिन्द दौउ खड़े, काकै लागू पाय।
बलिहारी गुरू आपने गोबिन्द दियो बताय।।

कबीर ने इसी प्रकार गुरू की तुलना कुम्हार से करते हुए कहा है कि जिस प्रकार कुम्हार चाक पर मिट्टी के घड़े बनाते समय घड़े हाथ रखता है तथा बाहर चोट मार मारकर उसको सुन्दर आकार प्रदान करता है। उसी प्रकार गुरू भी शिष्य को आन्तरिक आत्मिक रूप से मजबूत करता है तथा विभिन्न वाणियों, शब्दों के द्वारा ताने मारकर उसको कुसंगतियों से, बुराईयों से, व्यभिचारों से दूर करता है। जिसे कबीर ने निम्न दोहे के माध्यम से कहा है–

गुरू कुम्हार, शिष्य कुंभ है गढ़ी गढ़ी काडे खोट।
भीतर हाथ संवार दे, बाहर ते मारे चोट।।

इस प्रकार की धारणा रखने वाले कबीर ने प्रत्येक मनुष्य को कहा है कि बिना जाँचे, बिना परखे गुरू पर अंधे होकर विश्वास नहीं करना चाहिये। क्योंकि सच्चे गुरू के पास रहने, उठने, बैठने पर हर समय कुछ न कुछ सीखने को अवश्य मिलता है। सतगुरू के पास मन स्वतः रूक जाता है। उसके बताए हुए मार्ग का पालन करना चाहिये। यदि वह सच्चा मार्ग होता है तो परख लेना चाहिए अन्यथा अन्यत्र गुरू की तलाश करनी चाहिए। कबीर ने ढोंगी गुरू से सावधान रहने की हिदायत दी और कहा–

जाका गुरू भी अंधला, चेला खरा निरंध।
अंधहि अंधा ठेलिया, दोऊ कूप पडंत।।[3]

कबीर ने साधु संतों, महात्माओं को स्त्री से दूर रहने का संकेत किया है न कि नारी का तिरस्कार किया है। क्योंकि साधु का परम कर्तव्य होता है कि वह नियमपूर्वक ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए अपनी आध्यात्मिक उन्नति के लिये सदैव एकान्त में वास करे और जब कभी भी अपने ज्ञान को लोगों में वितरित करे तो लोग उसके समान ही अच्छे आचरण को ग्रहण करें। कबीर ने साधुओं को चेताते हुए कहा है कि सुन्दर युवा स्त्री त्यागी सन्यासी महात्माओं के साथ शोभा नहीं देती है। जिसकी उपमा काली हंडिया से करते हुए कहते हुए है कि जिस तरह काली हंडिया काला दाग लगा ही देती है उसी तरह सुन्दर स्त्री साधु सन्यासियों को पथ भ्रष्ट कर ही देती है। जिसे कबीर ने निम्न साखी के माध्यम से व्यक्त किया है–

सुन्दरी न सोहैं, सनकादिक के साथ।
कबहुँकदाग लगावैं, कारी हाँड़ी हाथ।।[4]

कबीर ने दूसरी ओर शिष्य की योग्यता को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। अयोग्य शिष्य गुरू की शिक्षा का दुरूपयोग कर सकता है। मन माना अर्थ निकाल सकता है जैसे– बांसुरी पर मनचाहा राग बजाया जा सकता है, वैसे ही कुछ शिष्य बातों की भावना को नष्ट करते हुए उनसे अपनी स्वार्थ सिद्धि भी कर सकते है। इन शिष्यों के सामने सतगुरू भी क्या कर सकता है? क्योंकि दुनिया बुराई को सहजता से स्वीकार करती है। जिसे कबीर ने निम्न दोहे के माध्यम से बताया है–

सतगुरू बपुरा क्या करे, जे सिख ही मांहै चूक।
भावे त्यों परमोधिए, ज्यूं बंसि बजाई फूक।।[5]

निष्कर्ष (Conclusion)

वर्तमान समय में छल, कपट, ढोंग, पाखण्ड तथा बाह्य रूप से रंगे हुए साधुओं एवं गुरूओं से सावधान होने में कबीर का ज्ञान सहायक है। क्योंकि कबीर के शब्दों को समझकर शिष्य गुरू से तथा अन्य साधु संतों से संगोष्ठी करके सहज, सरल एवं सच्चे गुरू की पहचान कर सकता है। शिष्य गुरू के साथ रहकर यह जान सकता है कि गुरू का स्वभाव कैसा है? गुरू की निगाहें कैसी है? गुरू लालची या भ्रमानें वाला है या त्यागी तथा समस्त लोकों में रमने वाला है। वर्तमान समय में भारत में देखा जाए तो कुछ साधु संतों एवं गुरूओं के पीछे भेड़ चाल के रूप में जन समूह दौड़ता हुआ दिखाई देता है और उन्हें ही परम तत्व समझ बैठता है तथा उसी गुरू का अनुगमन करता रहता है। ये जाने बिना की यह गुरू

भी क्या कभी परम तत्व से रूबरू हुआ है। सिर्फ गुरू की लोकप्रियता एवं बातों पर ही ध्यान नहीं देना चाहिए अपितु उसके आचरण को परखना चाहिये।

कबीर और विज्ञान (Kabir and Science)

वर्तमान समय वैज्ञानिक, भौतिकवाद का युग है। जिसमें प्रत्येक मनुष्य अपने व्यक्तिगत स्वार्थो की पूर्ति के लिए अनैतिक कार्य करने से भी नहीं डरता है। वर्तमान में यदि देखा जाए तो पाने के लिए भौतिक सुख यथाः भोग–विलास, धन, माया, नाम, इज्जत, रूतबा, पद, प्रतिष्ठा आदि है। लेकिन मनुष्य भाग दौड़ भरी जिन्दगी में जिन्दगी भर भागता ही रहता है। अन्तिम समय तक भी उसे इस बात का भान नहीं हो पाता कि वह किसके लिए जी रहा है? क्यों जी रहा है? वह अनैतिक कार्य करता है। क्या वास्तव में उनका उसके जीवन पर प्रभाव पड़ता है? और यदि पड़ता भी होगा तो वह प्रकृति के गूढ़ रहस्य के कारण समझ नहीं पाता कि प्रकृति का कार्य–कारण सिद्धांत क्या समझाना चाहता है? भौतिकता की चकाचौंध ने मनुष्य के विवेक रूपी दिव्य चक्षु को धूमिल कर दिया है। यदा कदा जब वह दुःख की अवस्था में होता है तब उसे प्रकृति के कार्य–कारण सिद्धांत तथा ईश्वरीय सर्वोच्च सत्ता की आवश्यकता महसूस होती है।

भौतिकता की चकाचौंध मनुष्य को शारीरिक सुख देती है। हालांकि अल्पकालीन मानसिक सुख भी देती है। लेकिन प्रकृति की व्यवस्था कुछ इस प्रकार होती है कि जीवन में हर मनुष्य को एक बार दुःख का बोध अवश्य होता है। क्योंकि धन और विज्ञान मनुष्य के जीवन को सहज, सरल एवं सुखी तो बना सकते है किन्तु मृत्योपरांत उसे जीवन नहीं दे सकती। चाहे मनुष्य बिल गेट्स की भांति पैसे वाला क्यों न हो या चाहे ओबामा की तरह प्रतिष्ठित पद पर आसीन हो लेकिन मनुष्य उस परम सत्ता की ओर अवश्य ही झुकता है।

वैज्ञानिक युग और भौतिकता के बीच समंवय के रूप में अध्यात्मिकता को लाया जा सकता है क्योंकि आध्यात्मिकता ही वह सेतु है जो सभी विज्ञानों का विज्ञान है साथ ही आध्यात्मिकता से मानसिक शांति भी प्राप्त की जा सकती है। आध्यात्मिकता व्यक्ति को अध्यात्म की ओर अग्रसर करती है जहाँ उसे हर प्रकार के प्रश्नों का सम्यक् उत्तर मिलता है। वह दुःख निवृत्ति का मार्ग ढूंढ़ने का प्रयास करता है जो कि बुद्ध ने किया। आध्यात्मिकता से जगत की उत्पत्ति, प्रलय के बारे में जाना जा सकता है। बेल्जियम के खगोलशास्त्री एवं पादरी जार्ज लैमेंटेयर जिन्होंने "बिग बैंग थ्योरी" दी, जिसके अन्तर्गत ब्रह्माण्ड लगभग 15 अरब वर्ष पूर्व एक विशालकाय अग्नि पिण्ड था जिसका निर्माण भारी पदार्थों से हुआ था। इसमें अचानक विस्फोट(ब्रह्माण्डीय विस्फोट या बिग बैंग) के कारण पदार्थों का बिखराव हुआ था।[6] इसी से ब्रह्माण्डिय पिण्डों का सृजन हुआ है, की तुलना "मसि कागद छुओ नहीं, कलम गही नहीं हाथ"[7] की घोषणा करने वाले कबीर की वाणी में उद्धृत शब्दों से भी की जा सकती है यथाः–

"तेई नूर थै सब जग किया कौन भला कौन मन्दा"[8]

उपरोक्त दोहे के माध्यम से कबीर भी इस जगत या सृष्टि की उत्पत्ति नूर रूपी अग्नि पिण्ड से मानते है। इसी नूर का खण्ड–खण्ड में विभाजित रूप कबीर ने सभी के घट में माना है। कबीर के रमैनी, शब्दों, साखियों एवं दोहों में ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति जिसे ज्योति से हुई है, उसे कबीर ने निरंजन नाम दिया है। इसी ज्योति का सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड पर आधिपत्य है। जिसे कबीर ने एक अन्य दोहे के माध्यम से और व्यक्त किया है। जो निम्नलिखित है–

"एक ज्योति से सब उतपना, कौन ब्राह्मण कौन सूदा"[9]

कबीर ने किसी भी पंथ, धर्म का पालन नहीं किया। न हीं अपने को किसी धर्म, ईश्वर से बांधा। बल्कि जिस तरह विज्ञान प्रयोगों और अन्वेषण पर आधारित होती है उसी प्रकार कबीर ने अपनी आध्यात्मिकता को वैज्ञानिकता प्रदान किया जिस तरह विज्ञान सत्य पर आधारित है। उसी तरह कबीर की अनुभूति भी सत्य पर आधारित है।

मनुष्य शरीर में जिस तरह विज्ञान शारीरिक संरचना की जानकारी प्रदान करती है। उसी प्रकार कबीर ने भी विज्ञान को आधार मानकर आध्यात्मिकता को विज्ञान से जोड़ा तथा शरीर की भीतरी संरचना तथा आत्मिक वजूद का अस्तित्व बताया। विज्ञान में मनुष्य के डी.एन.ए. को जिस प्रकार जनन के लिए उत्तरदायी माना है। उसी प्रकार कबीर, महावीर, बुद्ध इत्यादि ने भी ब्रह्मचर्य पालन का निर्देश दिया है। क्योंकि मनुष्य के इस द्रव्य से ही सम्पूर्ण सृष्टि का संचालन होता है। इस द्रव्य में अभूतपूर्व शक्ति समाहित होती है। इस द्रव्य के संरक्षण के द्वारा मनुष्य की प्राण ऊर्जा ऊर्ध्वगामी हो जाती है। जिससे मनुष्य की कुंडलिनी जागरण होती है। डी.एन.ए. की संरचना सर्पीलाकार द्विकुण्डलित होती है उसी प्रकार कुंडलिनी ऊर्जा भी सर्पिलाकार होती है। जिन्हें कबीर तथा अन्य संतों ने इंगला, पिंगला तथा सुषुम्ना का नाम दिया है। इंगला पिंगला क्रमशः मनुष्य के बांए और दाएं सूर है जो कि नासा छिद्र के द्वारा दोनों भौहों के पास मिलते है। वहाँ इनके संगम पर सुषुम्ना नाड़ी भी आकर मिल जाती है। जिसे त्रिवेणी का घाट कहा जाता है। यहाँ से साधक की यात्रा प्रारम्भ होती है। कबीर ने तथा अन्य दार्शनिकों ने तथा सिद्ध संतों ने इसी कुंडली को जागरण करने का प्रयास किया है (लेकिन कबीर इस कुंडली जागरण से भी संतुष्ट नहीं थे। वे इसे सिद्ध करने के बाद आत्म जागरण पर ज्यादा ध्यान केंद्रित करते थे।) यहीं कारण है कि भारत में आयुर्वेद जैसी चिकित्सीय पद्धति का उद्भव सुश्रुत, चरक, पतंजलि ने किया है। पतंजलि जो कि योग क्रिया में पारंगत थे। जिन्होंने शरीर संरचना से संबंधित विभिन्न रोगों का उपचार योग एवं प्राणायाम के माध्यम से बताया है।

यदि शरीर विज्ञान को देखा जाए तो भारतीय साधु संतों तथा ऋषि मुनियों की तपस्या में समानता भी है। क्योंकि आज तक जिस भी मनुष्य ने आत्म–साक्षात्कार की बात की है। उसने अपने शरीर पर ही अन्वेषण किया है तथा इस शरीर के भीतर ही परमात्मा का साक्षात्कार किया है। ध्यान देने योग्य बात यह है कि प्रकाश शरीर के भीतर कैसे दिखाई देता है? इसका जवाब है कि शरीर की रचना इस प्रकार से है कि उसमें प्रकाश समाहित है। अक्सर साधक जिन दृश्यों को अपने भीतर देखता है उन सबका संबंध उसकी चेतना से है। कबीर ने कहा है कि पांच तत्व से मनुष्य का शरीर निर्मित है। इस शरीर में

प्रकाश भी इन पांचों तत्वों का ही होता है। जिस तरह माइटोकॉन्ड्रिया जिसे कोशिका का शक्ति गृह कहते है उसमें प्रकाश के जैसी ऊर्जा की उपस्थिति होती है। मनुष्य अथवा साधक को जो दृश्य दिखाई देते है। उनमें सर्वप्रथम इन्हीं कोशिकाओं की संरचना में निहित न्यूरॉन्स जैसी संरचना दिखाई देती है। यह न्यूरॉन्स चमकीली भिन्न रंगों से युक्त होती है तथा इसका संबंध पीयूष ग्रन्थि तथा पीनियल ग्रंथि से होता है। जिसमें भांति–भांति के दृश्य तथा श्रवण की क्षमता है।

जिसे कबीर ने गगन माही उल्टा कुंआ कहा है। उसकी तुलना मस्तिष्क में अवस्थित श्वेत द्रव से की जा सकती है। इसी श्वेत द्रव में प्रकाश की उपस्थिति होती है तथा यह अलौकिक तथा पारलौकिक शक्तियों तथा सिद्धियों का केन्द्र होता है। जिसका संबंध सहस्त्रसार से होता है। जिसे कबीर ने निम्न शब्द के माध्यम से व्यक्त किया है–

रस गगन गुफा में अजर झरै।
बिन बाजा झनकार उठै, जँह समुझि परे जब ध्यान धरै।।[10]

इतना कहने के बाद भी कबीर का ज्ञान देह से विदेह में चला जाता है। सहस्त्रसार के बाद ब्रह्मरंध्र से कबीर की साधना शुरू होती है।

कबीर ने इसी कुंडलिनी के बारे मे जिक्र करते हुए कहा है कि हे! मनुष्य तू क्यूं व्यर्थ ही अपने लिए मन्दिर, महल बनाता है। जब तू मृत्यु को प्राप्त होगा तब इस घर में कैसे रहेगा? क्यों तू गर्व करके ऊँच नीच का भेदभाव लाता है। साढ़े तीन हाथ का कबीर का घर है। जितना शरीर है उतना ही उसका उपयोग करना चाहिए। यहाँ साढ़े तीन हाथ का तात्पर्य मनुष्य के बाह्य शरीर के बारे में है। यह शरीर प्रत्येक इंसान के उंगलियों से लगाकर कोहनी तक लगभग साढ़े तीन हाथ का होता है। चाहे कितना लंबा अथवा छोटा शरीर हो। इस शरीर पर ही कबीर ने ध्यान दिया है। इसे ही कबीर ने मन्दिर कहा है। सिर के शीर्ष पर कबीर का वास माना जाता है। जिसे कबीर ने निम्न दोहे के माध्यम से व्यक्त किया है–

काहे कूं मंदिर महल चिनाऊं।
मूवां पीछै घड़ी एक रहन न पाऊं।।
काहे कूं छाऊं ऊंच उचेरा।
साढ़े तीन हाथ घर मेरा।।[11]

यहाँ कबीर के साढ़े तीन हाथ की तुलना सर्प की साढ़े तीन कुंडली से की जा सकती है। जिसमें भूत, वर्तमान और भविष्य, तमोगुण, रजोगुण, सतोगुणों तथा चेतना की तीन अवस्थाओं जागृति, स्वप्न और सुषुप्ति का प्रतीक माना जाता है तथा तुरियावस्था को उच्च स्थिति माना जाता है। आदि कुंडली उस स्थिति का प्रतीक है जहाँ न जागृति है, न ही सुषुप्तावस्था [12]इस[I] प्रकार यह साढ़े तीन कुंडली हमारे शरीर के भीतर रहती है। जिसे भारतीय आध्यात्मिकता में प्रणव या ऊँ अथवा ओंकार के नाम से जाना जाता है। जिसे गुरू नानक ने भी "इक ऊंकार" सतनाम वाहेगुरू कहा है।

वर्तमान समय की आवश्यकता है कि कबीर के ज्ञान को आत्म ज्ञान के साथ दैहिक ज्ञान पर भी लगाना चाहिये। जिससे आयुर्वेद जैसी वैज्ञानिक पद्धति का विकास हो सके। कबीर के द्वारा दिये गए अनाहत धुन का प्रयोग जिस तरह कई डॉक्टर अपने मरीजों का मानसिक इलाज करने के लिए कृत्रिम संगीत/ध्वनियों, तरंगों का प्रयोग कर रहे है। उसी तरह भारतीय वैज्ञानिकों को चाहिये कि ध्वनि की प्रासंगिकता पर शोध किया जाए। क्योंकि इसके द्वारा वैज्ञानिक प्रौद्योगिकी को बढ़त मिलेगी। जिस तरह नासा (अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी) तथा यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी भारतीय धर्म के वेदों तथा ओंकार की ध्वनि पर प्रयोग कर रहा है तथा सूर्य तथा विभिन्न ग्रहों से तथा ब्रह्माण्डीय पिण्डों से निकलने वाली ऊर्जा की ध्वनि पर प्रयोग कर रहा है। निष्कर्ष के रूप में (वेदों में लिखित इस ध्वनि को ओंकार का नाम दिया गया है।) नासा ने भी इस ध्वनि को ओंकार से भिन्न या इतर कुछ भी नहीं माना है। इस ध्वनि का प्रयोग अन्वेषण तथा खोज के लिए किया जा रहा है। उसी प्रकार भारत जैसे भक्ति समृद्ध राष्ट्र में वैज्ञानिक प्रगति को बढ़ाने के लिए ध्वनि/धुन पर अन्वेषण करना चाहिये। इस संदर्भ में मेरा मानना है कि (ब्रह्माण्ड के रहस्यों को जानने के लिए 'यूरोपीय सेंटर फॉर न्यूक्लियर रिसर्च, सर्न ने 30 मार्च 2010 को पृथ्वी की सतह से 100 फीट नीचे 27 किमी लंबे सुरंग में एल. एच. सी.(लार्ज हैड्रान कोलाइडल) नामक एतिहासिक महाप्रयोग सफलतापूर्वक किया गया।) एल.एच.सी. में यदि प्रयोग को सफलतापूर्वक आगे बढ़ाने के लिए कबीर जैसे परम दार्शनिक संत की धुन पर अन्वेषण किया जा सकता है। जहाँ प्रोटॉन बीमों को प्रकाश की गति से टकराया तथा हिग्स बोसॉन कणों का निर्माण करवाया गया। वहीं नाद या धुन भी जब उत्पन्न होती है जब उसमें टकराहट होती है। यह अत्यधिक ऊर्जावान होती है। यदि अनवरत–अनाहद नाद/ध्वनि का प्रयोग किया जाए तो यह इससे भी ज्यादा शक्तिशाली होती है। जिन गॉड पार्टिकल्स का मूल आज तक वैज्ञानिक ढूंढ़ नहीं पाए। उसके मूल में वही है जो कि सूर्य के भीतर कोर में नाभिकीय संलयन से बनी है। जिसमें तीन तत्व है। जिन्हें कबीर ने रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण कहा है तथा इनके मिलन स्थल को ज्योति स्वरूपी कहा है। गॉड पार्टिकल्स के मूल में यदि खोजा जाए तो वहाँ भी ध्वनि या धुन होगी।

निष्कर्ष (Conclusion)

वर्तमान समय में बढ़ती हुई तकनीकि, ज्ञान–विज्ञान की प्रगति की मांग है, कि मनुष्य विज्ञान का प्रयोग जनकल्याण करने के लिए सकारात्मक रूप से एक वर के रूप में प्रयोग करें। न कि अभिशाप के रूप में। क्योंकि बढ़ती हुई विज्ञान प्रौद्योगिकी यथाः परमाणु बम, अणु बम, मिसाईलें, अस्त्र–शस्त्र, रासायनिक हथियार इत्यादि के मूल में मनुष्य जाति ही नहीं अपितु सम्पूर्ण धरती ही नष्ट हो सकती है। इस सन्दर्भ में मेरा मानना है कि सृष्टि जैसी प्रक्रिया जिसका प्रारम्भ तथा उद्विकास एक क्रमिक प्रक्रिया है। जिसको भावी पीढ़ियों के लिए सहेज कर रखने के लिए सतत् विकास के साथ विज्ञान और प्रौद्योगिकी का सहज एवं सकारात्मक मानवीय उपयोग के लिए प्रयोग करना चाहिये। क्योंकि विज्ञान मानव को जहाँ लाभ प्रदान करता है। वहीं नुकसान भी दे सकता है। परमतत्व द्वारा बनायी गयी सृष्टि को क्रमिक

रूप से संचालित होने दे। अन्यथा प्राकृतिक एवं मानवीय आपदाओं यथाः बाढ़, सूखा, भूकम्प, ज्वालामुखी विस्फोट, चक्रवात, प्लेट विवर्तन, अत्यधिक ऊष्मीय प्रभाव, ग्लेशियर प्रभाव, ग्लोबल वार्मिंग, आतंकवाद इत्यादि का सामना करना पड़ेगा।

कबीर और धर्म (Kabir and Religion)

कबीर ने धर्म को किसी संप्रदाय विशेष अथवा पंथ और समुदाय की सीमाओं में नहीं बांधा। कबीर ने धर्म की व्याख्या करते हुए कहा है कि धर्म वहीं होना चाहिए जिसमें सभी घटों में उस परवर्धिकार, परमात्मा राम का दर्शन हो अर्थात जहाँ किसी प्रकार का कोई भी बाह्य आडम्बर, अंधविश्वास, परम्परा, ऊँच–नीच, जाति–पाति न हो अपितु समतामूलक समाज हो जहाँ सभी अपने ईमानदारी से कर्तव्यों का पालन करते हुए उस परम तत्व का सुमिरण करें। जिससे चहु दिशाओं में प्रेममय वातावरण का विकास हो सके। कबीर ने हिंदू–मुसलमानों, योगियों, ब्राह्माणों इत्यादि को चेताते हुए कहा है कि हे! योगी अपना आसन प्राणायाम का जंजाल दूर करों और कपट छोड़कर नित्य हरि का भजन करों। सींगी और मुद्रा चमकाने से तथा शरीर में राख रमाने से क्या फायदा? वहीं सच्चा हिंदू और सच्चा मुसलमान जिसका इमान दुरूस्त रहता है और वहीं सच्चा जोगी है जो उनमुनि मुद्रा का ध्यान करें। यहाँ से तात्पर्य गंभीर चिंतन से है। जिसमें आत्म ज्ञान की गंभीरता से खोज की ओर गमन होता है। जहाँ चित की एक्रागता होती है। इसी प्रकार वहीं ब्राह्मण कहलाने योग्य है जो ब्रह्म ज्ञान का ज्ञानी हो। कबीर कहते है कि हे! मनुष्य कुछ भी मत करो। केवल नाम राम जप कर जीवन का लाभ लो। जिसे निम्न दोहे के माध्यम से कहा कबीर ने व्यक्त किया है–

आसन पवन दूरि करि रउरा।
छांड़ि कपट नित हरि भजि बौरा।।
का सींगी मुद्रा चमकाएं।
का बिभूति सब अंग लगाएं।।
सो हिंदू सो मूसलमांन।
जिसका दुरूस रहै ईमान।।
सो जोगी जो धरै उनमनी ध्यान।
सो ब्रह्मा जो कथै ब्रह्म गियान।।
कहै कबीर कछु आन न कीजै।
राम नाम जपि लाहा लीजै।।[13]

उपर्युक्त दोहे में कबीर ने हिन्दू और मुसलमान दोनों को अपना इमान याद दिलाते हुए यह कहा है कि वहीं सच्चा हिंदू और मुसलमान है जो ईमानदारी से जीवन यापन करें। वर्तमान समय में जिस तरह से भ्रष्टाचार बढ़ता जा रहा है। हर व्यक्ति अपने निजी स्वार्थो के लिए हर अनुचित कार्य करने में भी संकोच नहीं करता है मानो उसे धन एकत्र करने की कोई धुन सी सवार हो गई। जिसके लिए वह अन्य लोगों को दुःख भी पहुंचा देता है। वर्तमान समय में यदि कबीर की ओर अनुगमन किया जाये तो भ्रष्टाचार, बेईमानी, छल–कपट जैसी कुप्रवृतियों से निजात पाया जा सकता है।

कबीर ने हिंदू और मुसलमानों तथा धर्म से बंधे कट्टरपंथियों को अल्पज्ञानी बताते हुए ये कहा है कि इंसानों में ही यदि भेद नहीं है तो इंसान को बनाने वाले परम तत्व में भेद कैसे हो सकता है। इंसान द्वारा बनाया गया धर्म ईश्वर को नहीं बना सकता है। इसीलिए कबीर ने कहा है कि ईश्वर द्वारा बनाया गया मंदिर/मस्जिद मनुष्य की देह अथवा शरीर है। इस सन्दर्भ मेरा मानना है कि इसी शरीर को साधने के उपरांत परम तत्व की प्राप्ति हो सकती है। जिस प्रकार एक देवता को पाने के लिए, देवता बनना पड़ता है। उसी प्रकार परम तत्व को प्राप्त करने के लिए, परम तत्व जैसा बनना पड़ता है अर्थात जिस प्रकार परम तत्व दयावान, सर्वहितकारी, कल्याणकारी, परोपकारी, पाप नाशक तथा प्रेममयी है। उसी प्रकार मनुष्य को चाहिये कि वह पृथ्वी पर मौजूद सभी प्राणियों से प्रेम करें और सर्वहित की भावना अपने हृदय में संजोकर दया के सागर से लबालब या ओतप्रोत रहे। इसी दया के सागर में वह मानसरोवर जैसे पवित्र स्थल की तरह डुबकी लगाता रहे और हर बार एक नयी ऊर्जा के साथ दूसरे लोगों का भी कल्याण करें।

धार्मिक रूप से संकीर्ण व्यक्तियों को चेताते हुए, कबीर ने कहा है कि धर्म के नाम पर आपस में झगड़ा व्यर्थ है। क्योंकि किसी भी धर्म में ये नहीं कहा गया है कि ईश्वर प्राप्ति के लिये अन्य किसी को दुःख, व्यथा देना चाहिए। सच्चा ईश्वर तथा सच्चा धर्म वहीं है जिसमें दया का भाव हो। कबीर के शब्दों से तथा रमैनी से वर्तमान समय में फैल रही साम्प्रदायिकता तथा आतंकवाद से भी निजात पाया जा सकता है। जो कि वर्तमान समय की सबसे बड़ी वैश्विक समस्या है। कबीर ने कहा है कि क्यों व्यर्थ में धर्म के लिए लड़ते हो, जिसका उदाहरण देते हुए कबीर ने कहा है कि दत्तात्रेय ने शत्रुओं के किले को कब तोड़ा था तथा सुखदेव जी ने कब तोपों को जोड़ा था। नारद जी ने कब बंदूक चलाई और व्यास जी ने कब बम्ब का प्रयोग किया था। पहले के संतों ने जैसे दत्तात्रेय, व्यास, नारद आदि ने परम तत्व के लिए भक्ति का ही दर्शन दिया है न की लड़ने का। जबकि जो लोग बुद्धि से मंद है। वही लड़ाई करते है और ये ढ़ोंगी साधु–विरक्त का तथा पाखण्डी धर्म गुरूओं का रूप धारण करके लोभ को मन में बसा लेते है। ये लोग सोना पहनकर विरक्त संयासी के वेष को लजाते है तथा ये लोग घोड़ा और घोड़ी आदि को बटोर कर जमात चलाते है और दो चार गांव पा जाने पर जैसे कोई करोड़पति ठाकुर मालिक चलता है वैसे घोड़ा, घोड़ी ऊंट आदि को एकत्र कर जमात लेकर चलते है। जिसे कबीर ने निम्न रमैनी के माध्यम से व्यक्त किया है–

कब दत्ते मावासी तोरी,
कब शुकदेव तोपची जोरी।
नारद कब बन्दूक चलाया,
ब्यासदेव कब बम्ब बजाया।।
करहिं लराई मति के मन्दा,
ई अतीत की तरकसबन्दा।
भये विरक्त लोभ मन ठाना,
सोना पहिरि लजावैं बाना।।
घोरा घोरी कीनह बटोरा,
गाँव पाय जस चले करोरा।–[14]

निष्कर्ष (Conclusion)

उपर्युक्त कबीर की रमैनी का महत्त्व वर्तमान समय में भी प्रासंगिक है। क्योंकि वर्तमान समय में राजनीतिक दल अपने निजी स्वार्थो की पूर्ति के लिये साम्प्रदायिकता जैसी भावना को फैलाते है। उसी प्रकार समाज की मुख्य धारा से वंचित गरीब, भूखे तथा असहाय बच्चों और किशोरों को कुछ चुनिंदा धार्मिक कट्टरपंथी समूहों तथा गुरूओं द्वारा आतंकवाद की शिक्षा दी जाती है तथा धर्म का प्रयोग करके उन्हें भ्रमाया जाता है तथा उन्हें धर्म का वास्ता देकर धर्म के नाम पर अपनी कुर्बानी तथा लोगों की जान लेने के लिए विवश किया जाता है। जिससे ये अपने स्वार्थों की पूर्ति करते है। नुकसान किसका होता है? सिर्फ गरीब जनसमुदाय का।

कबीर और जाति, वर्ण, छुआछत, ऊँच–नीच आदि प्रवृत्तियाँ (Kabir and Caste, Varna, Untouchability, High And Low Trends)

कबीर ने मनुष्य को एक परम सत्ता की संतान मानते हुए जाति, वर्ण, छुआछूत, ऊँच–नीच आदि प्रवृत्तियों भर्त्सना की तथा सभी में समानता का भाव प्रदर्शित करते हुए। कबीर ने कहा है कि मनुष्य इतना पवित्र बनकर अपने आप को मानो गंगा धूला हुआ समझता है। लेकिन भीतर की गहराईयों को वह नहीं देखता है। "तन मैला तो क्या भया, मन मैला तो सबहुँ ही गया।" अर्थात शारीरिक शुद्धता, पवित्रता रखकर कोई व्यक्ति शुद्ध नहीं हो सकता। क्योंकि जब तक उसके अंतर्मन में द्वन्द्व, छुआछूत जैसी भावना है। उसकी सुरति कभी भी हरि भजन में नहीं लग सकती। क्योंकि उसका ध्यान हमेशा इसी बात पर लगा रहेगा कि मेरे आस–पास का स्थान पवित्र है या नहीं। मुझे किसी अपवित्र व्यक्ति ने छू/स्पर्श तो नहीं कर लिया। अब पूजा–अर्चना कैसे करूँगा? इत्यादि भ्रान्तियों से वह व्यक्ति युक्त हो जाता है। अब यहाँ अंतर्मन में सोचने लायक बात है तो यह है कि क्या बिना छुआछूत, जातिवाद, वर्ण व्यवस्था, ऊँच–नीच आदि के साधना की जा सकती है? इसका जवाब होगा हाँ...क्योंकि कबीर ने जिसे सर्वोच्च सत्ता माना है वह घट–घट में निवास करती है। वह गुप्त, गूढ़, रहस्य, अदृश्य रूप में हर जगह व्याप्त है। उसे कोई छू नहीं सकता। जब तक कि वह स्वयं न चाहे।

इसी अपवित्रता को दूर करने के लिए ब्राह्मणों द्वारा निम्न मंत्र का प्रयोग किया जाता है–

ऊँ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोअपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

उपर्युक्त मंत्र का प्रयोग करके ब्राह्मण अपनी अपवित्रता को दूर कर लेते है। यहाँ विचारणीय बात यह है कि पुण्डरीकाक्ष भगवान/विष्णु का स्मरण करने मात्र से ब्राह्मण हर प्रकार की अपवित्रता से पवित्र हो जाता है।यहाँ कबीर के राम सुमिरण की तुलना इस मंत्र से की जा सकती है। क्योंकि ब्राह्मण तो मात्र इस मंत्र का प्रयोग एक बार ही करता है। जब वह पूजा, जप, हवन/यज्ञ करवाता है। लेकिन कबीर तो श्वास दर श्वास भगवान विष्णु/राम का सुमिरण करते है। कबीर के अनुसार, नाम से सारी पवित्रता घटित होती है और यहाँ ब्राह्मणों की इस चतुरता का खण्डन करते हुए कबीर कहते है कि हे! ब्राह्मण इस जगत का निर्माण उस परम सत्ता अथवा ज्योति से हुआ है। कौन ब्राह्मण, कौन वैश्य, कौन शुद्र है? कार्य के आधार पर सबका बंटवारा था। जिसे तुमने अपनी स्वार्थ सिद्धी के लिए जन्म आधारित कर दिया है। माटी का शरीर सहज रूप से बनाया है। जिसमें नाद यानि औंकार की ध्वनि तथा बिंद यानि ज्योति स्वरूपी परमात्मा सहज रूप से इस शरीर में व्यापक है। इसी ज्योति स्वरूप से रजो, तमो, सतो गुण की उत्पत्ति हुई। जिनसे क्रमशः ब्रह्मा, महेश, विष्णु बने। कबीर कहते है कि राम नाम जपो। न कोई हिन्दू है और न ही कोई तुरक। जिसके लिए कबीर ने निम्न दोहों का प्रयोग किया है–

एक बूंद एकै मल मूतर,
एक चाँम एक चाँम एक गूदा।
एक जोति थैं सब उतपनाँ,
कौन बाँम्हन कौन सूदा।।
माटी का प्यंड सहजि उतपनाँ,
नाद रू ब्यंद समाँनाँ।
बिनसि गयाँ थै का नाँव धरिहौ,
पढ़ि गुनि हरि भ्रँन जाँना।।
रज गुन ब्रह्म तम गुन संकर,
सत गुन हरि है सोई।
कहै कबीर एक राँम जपहु रे,
हिंदू तुरक न कोई।।[15]

कबीर ने ब्राह्मणों को चेताते हुए कहा है कि तुम झूठी पाखण्ड, कर्मकाण्डीय पूजा पद्धति करते हो। अपने आप को श्रेष्ठ बताते हो। यदि तुम जन्म से ही ब्राह्मण हो तो तुम जनेऊ/यज्ञोपवित् धारण करके पैदा क्यों नहीं हुए? अन्यथा किसी अन्य विधि से या द्वार से जन्म क्यों नहीं लिया? इसी प्रकार मुसलमानों से कहा कि तुम जन्म से मुसलमान पैदा क्यों नहीं हुए? अर्थात शरीर के भीतर गर्भवास में ही खतना क्यों नहीं करवाया? जिसके लिए कबीर ने निम्न दोहे का प्रयोग किया है–

जो तू ब्राह्मण ब्राह्मणी जाया।
और राही तैं काहे न आया।।
जो तू तुरुक तुरुकनि को जाया।
पेटहि काहै न सुन्नति कराया।।[16]

कबीर ने इसी प्रकार जाति को आधार बनाते हुए कहा है कि हरि जाति पांति को नहीं मानता है। जो हरि को भजता है। वही हरि का हो जाता है। यहाँ हरि का तात्पर्य परमतत्व से है जो सभी के घट में रहता है। जिसे निम्न दोहे के द्वारा व्यक्त किया जा सकता है–

जाति पाति पूछै नहिं कोई।
हरि को भजै सो हरि कौ होई।।[17]

इसी प्रकार कबीर ने ऊँच–नीच, भेदभाव इत्यादि का खण्डन करते हुए कहा है कि सभी मनुष्य समान है। व्यक्ति अपने कर्मो से छोटा बड़ा होता है। न कि कुल में जन्म लेने से। कबीर कहते है कि ऊँचे कुल में जन्म लेने का क्या फायदा? यदि कर्म उच्च न हो। जिसकी तुलना कबीर ने सूरा से भरे स्वर्ण कलश से की है। जिसे निम्न दोहे से समझा जा सकता है–

ऊँचे कुल क्या जनमिया, जे करणी ऊंच न होई।
सोवन कलस सुरे भद्या, साधौ नीद्या सोइ।।[18]

इसी तरह कबीर ने छुआछूत पर कटाक्ष करते हुए कहा है कि छुआछूत करना व्यर्थ है। क्योंकि यदि

छुआछूत को देखा जाए तो हर चीज ही छूत से ग्रसित है। जैसेः– पानी को देखने पर, पानी मछली का झूठा है। पानी में विभिन्न जंतुओं के जीवाश्म, मल–मूत्र इत्यादि मिले हुए है। यदि छूत को देखा जाए तो सारी सृष्टि ही छूत का मिश्रण है। क्योंकि ना जाने कितने जीव इसमें भसम हो चुके है और जन्म–मरण की क्रिया चलती रही है। छूत से वहीं बचा है जो विषयासक्ति एवं माया मोह से रहित है। जिसे कबीर ने शब्द–41 के माध्यम से व्यक्त किया है–

छूतिहिं जेंवन छूतिहिं अँचवन,
छूतिहिं जगत उपाया।
कहहिं कबीर ते छूति विवर्जित,
जाके संग न माया।।[19]

निष्कर्ष (Conclusion)

वर्तमान समय में जिस तरह समाज खण्ड–खण्ड में विभक्त है। उसी तरह सम्पूर्ण संसार में जातिगत श्रेष्ठता, भौगोलिक श्रेष्ठता, ज्ञानीय श्रेष्ठता, वैज्ञानिक तथा तकनीकी श्रेष्ठता तथा धार्मिक श्रेष्ठता इत्यादि बातों को लेकर ऊँच–नीच का भेदभाव किया जाता है। जो कि भारत की मूल भावना 'वसुदैव कुटुम्बकम्' की भावना से मेल नहीं खाता है। इस विविधता के कारण वर्तमान समय में क्षेत्रीयता, नृजातीय संघर्ष, भौगोलिक संघर्ष, जातीय संघर्ष निरंतर बढ़ रहा है तथा भारत में भी धर्म के नाम पर मोब लिंचिंग जैसी घटनाएँ घटित हो रही है। जिसके कारण कई निर्दोष व्यक्तियों की हत्याएं कर दी जाती है। राजनीतिक दल अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए विभिन्न प्रकार की साम्प्रदायिकता, नस्लवाद, उग्रवाद, क्षेत्रीयतावाद, आतंकवाद इत्यादि पहलुओं का प्रयोग कर रहे है। जिससे भारत की साख एवं प्रतिष्ठा के साथ आर्थिक स्थिति भी कमजोर हो रही है। वर्तमान समय में चाहिये कि कबीर जैसे परम ज्ञानी संत की विचारधारा का अनुपालन किया जाए। जिसमें एकमात्र जाति मानव जाति हो। जिसका इष्टदेव मानवतारूपी दयालु, प्रेमपूर्ण भावना रखने वाला परमतत्व हो। जो सभी का कल्याण करें।

अंत टिप्पणी (Endnotes)

1. *सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, कबीर, दि बंगाल प्रेस दिल्ली–110006, पृ॰ 21*
2. *अग्रवाल, पुरुषोत्तम, कबीर साखी और सबद, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, संस्करण 2007, वसंतकुंज, नई दिल्ली 110070, पृ॰ 41*
3. *उपरोक्त, पृ॰ 39*
4. *सिंह, डॉ॰ जयदेव, सिंह, वासुदेव, बीजक, पारख प्रकाशक कबीर संस्थान, प्रीतम नगर, इलाहाबाद, इण्डियन प्रेस प्रा॰ लिमिटेड, रमैनी 69 (साखी), पृ॰ 40*
5. *उपरोक्त, पृ॰ 156*
6. *बर्णवाल, महेश कुमार, भूगोल एक समग्र अध्ययन, कॉस्मोस पब्लिकेशन, नई दिल्ली, संस्करण 2018, पृ॰ 2*
7. *सिंह, डॉ॰ जयदेव, सिंह, वासुदेव, बीजक, पारख प्रकाशक कबीर संस्थान, प्रीतम नगर, इलाहाबाद, इण्डियन प्रेस प्रा॰ लिमिटेड, पृ॰ 144*
8. *सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, कबीर, दि बंगाल प्रेस दिल्ली–110006, पृ॰ 72*
9. *कबीर ग्रन्थावलि, पद, राग गौड़ी, पद 57, पृ॰ 130*
10. *तिवारी, कैलाश नारायण, विरले दोस्त कबीर के, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, संस्करण 2015, वसंत कुंज, दिल्ली, पृ॰ 122*
11. *सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, कबीर, दि बंगाल प्रेस दिल्ली–110006, पृ॰ 32*
12. *शुक्ल, रमेश चन्द्र, चक्र एवं कुंडलिनी, पुस्तक महल, दिल्ली, संस्करण 2007, पृ॰ 113*
13. *तिवारी, पारसनाथ, कबीर,राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, बसंत कुंज नई दिल्ली, संस्करण 2013, पृ॰ 64*
14. *सिंह, डॉ॰ जयदेव, सिंह, वासुदेव, बीजक, पारख प्रकाशक कबीर संस्थान, प्रीतम नगर, इलाहाबाद, इण्डियन प्रेस प्रा॰ लिमिटेड, रमैनी 69, पृ॰ 40*
15. *दास, श्यामसुन्दर, कबीर ग्रन्थावलि, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 2016, पृ॰ 130*
16. *साहेब, विज्ञान मुनि, सत्यनाम कबीर विज्ञान बीजक दर्शन, रमैनी 62, प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश, पृ॰ 157*
17. *उपरोक्त, पृ॰ 49*
18. *अग्रवाल, पुरुषोत्तम, कबीर साखी और सबद, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, संस्करण 2007, वसंत कुंज, नई दिल्ली–110070, पृ॰ 171*
19. *साहेब, विज्ञान मुनि, सत्यनाम कबीर विज्ञान बीजक दर्शन, प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश, पृ॰ 292*